प्रथम अध्याय

''भीष्म साहनी : जीवन एवं साहित्य''

प्रथम अध्याय

भीष्म साहनी : जीवन एवं साहित्य

प्रस्तावना

साठोत्तर हिंदी नाटकों में भीष्म साहनी के नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । भीष्म साहनी हिंदी साहित्य में सुविख्यात कथाकार के रूप में लब्धप्रतिष्ठ हैं । उन्होंने उपन्यासकार ,कहानीकार, नाटककार तथा विचारक के रूप में हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है । उन्होंने अपने साहित्य में सामंतवादी ,पूँजीवादी तथा शोषित वर्ग की यथार्थ जिंदगी का चित्रांकन किया है । उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रभावी ढंग से वाणी दी है । समाज में व्याप्त बुराइयाँ, धर्माभिमान ,द्वेष ,साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण भी उनके साहित्य में प्राप्त होता है। उनका समूचा साहित्य सामाजिक जीवन का दर्पण बनकर सामने आ जाता है । उनके साहित्य में व्यक्ति-स्वातंत्र्य ,भाईचारा और मानवता के दर्शन होते हैं । उन्होंने जो महसूस किया जो भोगा तथा अनुभव किया उसको ही अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने रखा । स्वयं भीष्म साहनी ' अपनी बात ' में लिखते हैं-" मैं समझता हूँ, अपने से अलग साहित्य नाम की कोई कोई चीज नहीं होती ।जैसा मैं हूँ, वैसी ही मैं रचनाएँ भी रच पाऊँगा । मेरे संस्कार ,अनुभव, मेरा व्यक्तित्व ,मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं ।इनमें से एक भी झूठी हो तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है ।.... लेखक का अपना सत्य जीवन के सत्य से निराला नहीं होता । न ही जीवन का सत्य और लेखक का सत्य दो अलग अलग सत्य होते हैं । एक ही सत्य होता है और वह जीवन सत्य होता है । उसीको साहित्य वाणी देता है ।"[1]

1.1 जीवन परिचय--

भीष्म साहनी का जीवन परिचय नीचे ब्यौरेवार रूप से दिया जा रहा है --

----

1 भीष्म साहनी – अपनी बात, पृष्ठ – 26–27 ।

1.1.1 **जन्म तथा जन्मस्थान**

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखनेवाले तथा सुप्रसिद्ध कथाकार भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 में रावलपिण्डी में हुआ । अपने जन्मस्थल के संबंध में स्वयं भीष्म साहनी कहते हैं -" जन्म रावलपिण्डी में हुआ । मुहल्ले का नामः छाछी मुहल्ला ।यहाँ ज्यादातर ताँगे चलानेवाले गाड़ीवान लोग रहते थे । घर के ऐन सामने ही उनका बड़ा–सा बाड़ा था, वहीं पर इनके घोड़े –ताँगे भी रहते, वहीं पर अलग–अलग कोठरियों में इनके परिवार भी।"[1]

1.1.2 **माता–पिता––**

भीष्म साहनी की माता का नाम था ' लक्ष्मीदेवी ' और उनके पिता का नाम था 'हरवंशलाल।

भीष्म साहनी की माँ बड़े धार्मिक स्वभाव की थी ।अपनी माँ के संबंध में भीष्म साहनी कहते हैं -" माँ भी धार्मिक वृत्ति की थी, पर उनमें कट्टरता नहीं थी वह मंदिर हो या गुरूद्वारा या आर्यसमाज मंदिर, हर जगह पहुँच जाती थी । उन्हें स्कूल जाने का मौका नहीं मिला था । पर अपनी मेहनत से उन्होंने पढ़–लिख लिया था । उनकी जिज्ञासा कभी शांत नहीं हो पाती थी, न ही ज्ञान–विज्ञान की उनकी भूख ।कभी उर्दू सीखने बैठ जाती, कभी अंग्रेजी ।एक बार तो संस्कृत भी पढ़ने लगी थी । घर में जो साधु–संत आता, उसीसे शंका–समाधान करने बैठ जाती ।"[2]

भीष्म साहनी और उनके बड़े भाई बलराज, जब दोनों मेले में खो गए थे, तब उनके घर पहुँचने पर उनकी माँ ने उन दोनों की नजर उतारी थी । इस संबंध में भीष्म साहनी बताते हैं-"... हम दोनों भाई एक मेले में खो गये थे, जिस कारण माँ बड़ी चिंतित रही थी । हमारे घर पहूँच जाने पर उसने आग में मिर्चे डाली थी, शायद अपशगुन दूर करने के लिए ।"[3] इस प्रकार भीष्म साहनी की माँ अन्य भारतीय स्त्रियों की तरह शगुन–अपशगुन माननेवाली स्त्री नजर आती है ।

बचपन में, भीष्म साहनी की माँ, उनका सिर अपनी गोद में रखकर उन्हें सुनाने के लिए या उनकी बीमारी की हालत में, उनके दुखते सिर को थपथपाते हुए मोतीराम का बैराग्यपूर्ण बारहमासा गाया करती थी । उस गीत के बोल मीठे पर बड़े वैराग्यपूर्ण थे । उस गीत में मौत का जिक्र बार–बार हुआ करता था । इस गीत के बोल जैसे ही उनके पिताजी के कान में पड़ जाते थे, वे भीष्म की माँ को

---

1 भीष्म साहनी – मेरे साक्षात्कार : भीष्म साहनी, पृष्ठ – 145 ।

2 वही, पृष्ठ–146 ।

3 भीष्म साहनी - (ब) परिशिष्ट मे उद्धृत

डॉटते हुए कहते-"तू फिर वैराग्य के गीत ले बैठी है ? तुझे तो कई बार समझाया है, बच्चों के कान में खुशी के गीत पड़ने चाहिए ।"[1]

पिताजी का डाँट सुनकर माँ चुप हो जाती थी । भीष्म के पहले उनकी तीन बहनें स्वर्ग सिधार चुकी थीं । भीष्म के बचपन में एक और बहन मृत्यु की गोद में चली गयी थी । शायद इसलिए उनकी माँ को वैराग्य के गीत गाना अच्छा लगता था ।

भीष्म साहनी के मन-मस्तिष्क पर माँ की अमिट छाप है । इसलिए उनके 'झरोखे ' और ' कुन्तो' उपन्यास पढ़ने के बाद माँ की जो छवि मानस में उभरती है, वास्तव में उनकी माँ वैसी ही है। स्वयं भीष्म साहनी का कथन है-"माँ का चरित्र बहुत कुछ वैसा ही था जैसा झरोखे और कुन्तो में चित्रित हुआ है ।"[2]

भीष्म साहनी के पिता हरवंशलाल आर्यसमाजी थे । वे गरीबी से लड़कर बड़े हुए थे । इसलिए उनके रहन-सहन में सादगी और संयम था । वे कपड़े के व्यापारी थे । व्यापारी होने पर भी अधिक धनसंचय का लोभ उनमें न था । वे अल्पसंतुष्ट व्यक्ति थे । इसके बावजूद उन्होंने अधिक धन कमाया और भीष्म तथा उनके बड़े भाई बलराज को लाहौर पढ़ने के लिए भेजा । भीष्म अपने पिता के स्वभाव के बारे में कहते हैं-" व्यापारी रहते हुए भी वह धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे, उनकी रूचि समाज-सुधार में ज्यादा थी । अर्थ संचय की दृष्टि से वह महत्त्वाकांक्षी नहीं थे । थोड़े में संतुष्ट रहनेवाले व्यक्ति थे। शायद इसी मनोवृत्ति के कारण देश का बँटवारा हो जाने पर जब उन्हें दो कपड़ों में निकल आना पड़ा, तो उन्हें बहुत गहरा सदमा नहीं हुआ, इस नुकसान को उन्होंने बड़े धैर्य और दृढ़ता से सहन किया ।"[3]

1.1.3 बड़े भाई: बलराज साहनी

भीष्म साहनी के बड़े भाई का नाम था, 'बलराज साहनी ' । वे दीखने में बहुत खुबसूरत, गोरे-चिट्टे थे । वे बड़े स्वस्थ और हट्टा-कट्टा थे पढ़ने-लिखने में भी काफी तेज थे । वे स्वभाव से साहसी, निर्भीक और विद्रोही थे । भीष्म साहनी अपने और बड़े भाई के बीच के शारीरिक और चारित्रिक अंतर को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-" स्कूल के उस्ताद भी हमारी तुलना करते हुए कहा करते थे कि लालाजी के दोनों बेटों में नॉर्थ पोल और साउथ पोल का अंतर है ।"[4]

---

1 भीष्म साहनी - मेरे साक्षात्कार : भीष्म साहनी , पृष्ठ -175 ।
2 वही, पृष्ठ - 175 ।
3 वही, पृष्ठ - 146 ।
4 वही, पृष्ठ - 96 - 97

बलराज एम्.ए. करने के बाद शांतिनिकेतन में जाकर पढ़ाने लगे और वहाँ से वे लंदन जा पहुँचे । वे लंदन से लौटकर सीधे बंबई की फिल्मी दुनिया में अपने पाँव जमाने चले गए । वे हिंदी फिल्म उद्योग में मशहूर अभिनेता बन गए । उनका जीवन अधिक संघर्षमय रहा । अपनी जीविका जुटा पाने के लिए तथा एक कुशल कलाकार बन पाने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा । अपने बड़े भाई बलराज के बारे में भीष्म साहनी कहते हैं-" मुझे मेरे भाई बहुत प्रिय थे, बरसों तक वह मेरे लिए ' हीरो ' समान रहे ।उनसे मुझे बहुत प्यार मिला । वह बड़े निर्भीक स्वभाव के थे, अपने विश्वास'के पक्के, मन में कोई धुन समा जाए तो उसे पूरा करके छोड़ते थे । उनकी पेशकदमी ,उनका आत्मविश्वास सभी मुझे गहरे में प्रभवित करते थे , मुझे उनका ओजस्वी ,स्नेहपूर्ण व्यक्तित्व बहुत याद आता है ।"[1] स्पष्ट है कि अपने बड़े भाई से वे प्रभावित रह चुके हैं ।

1.1.4 **पारिवारिक वातावरण--**

भीष्म साहनी के परिवार में सदाचार, सादगी और संयम को बड़ा महत्त्व दिया जाता था । उनके पिता पुरूषार्थप्रेमी ,आशावादी ,आर्यसमाजी सक्रिय कार्यकर्ता थे । उनमें धार्मिक कट्टरता नहीं थी। समय के साथ उनके घर के पारिवारिक वातावरण में धीरे-धीरे परिवर्तन आया । अपने पारिवारिक वातावरण के संबंध में भीष्म साहनी का कहना है -" बचपन को लाँघकर ,लड़कपन में कदम रखते हुए, कब सिर पर से चुटिया गायब हुई, कब सिर पर थोड़े-बहुत कंघी करने लायक बाल रखे जाने लगे, कब पायजामा की जगह पतलून ने ले ली, कब घर में वार्तालाप पंजाबी की जगह अंग्रेजी में होने लगा, चौके में खाना खाने के बजाय मेज पर परिवार बैठने लगा, कब मेरे मुसलमान दोस्त घर में आने लगे, भगतसिंह ओर उनके साथियों की तस्वीर घर में लगी, ये सब परिवर्तन समय के साथ-साथ होते गये । बँटवारे के बाद मार्क्सवाद की चर्चा होने लगी थी आदि आदि ।

संक्षेप में कहूँ तो घर के अन्दर बाहर की हवाएँ आती ही रहीं, उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की गई ।"[2] इस तरह साहनी जी के परिवार का वातावरण समकालीन परिस्थितियों के साथ परिवर्तित होता रहा ।

----

1 भीष्म साहनी - मेरे साक्षात्कार : भीष्म साहनी , पृष्ठ - 86-87 ।

2 वही, पृष्ठ - 55 ।

1.1.5 **शिक्षा--**

भीष्म साहनी की प्रारंभिक शिक्षा, रावलपिण्ड़ी शहर के नजदीक एक गुरूकूल में डेढ़-दो साल तक हुई । भीष्म साहनी अपने बड़े भाई बलराज के साथ, पीली धोती और लाठी के साथ रोज गुरूकुल में जाते थे, अष्टाध्यायी के सूत्र कण्ठस्थ करते थे । आर्यसमाजी पिता को गुरूकूल की पढ़ाई सीमित लगने के कारण तथा बड़े भाई के इन्कार, विद्रोह के कारण भीष्म तथा उनके भाई को स्थानिय डी.ए.वी. स्कूल में डाला गया ।

अपनी स्कूल की पढ़ाई के संबंध में भीष्म साहनी का कथन हे-" स्कूल मूलतः निम्न-मध्यवर्ग के ही बालकों का स्कूल था । हिन्दू-मुसलमान - सिख, सब बच्चे उसमें पढ़ते थे । पर ज्यादातर बच्चे गरीब परिवार के ही थे । शिक्षा का माध्यम उर्दू था, साथ में हिंदी, संस्कृत भी चलती थी -घर पर भी और स्कूल में भी - पाँचवी कक्षा से अंग्रेजी पढ़ाई जाने लगी थी ।"[1]

विद्यार्थी जीवन में भीष्म साहनी को आठवीं कक्षा में जिले में चौथे नंबर पर आने पर एक मैडल दिया गया था । उन दिनों ,रावलपिण्ड़ी में सालाना घोडों की मण्ड़ी लगती थी । मण्ड़ी में लाए गए घोडों में से, अच्छे पले हुए घोडों को इनाम दिए जाते थे । भीष्म साहनी अपने पारितोषिक समारोह का वर्णन करते हुए कहते हैं-" अच्छे पले हुए घोड़ों को इनाम दिये जाते थे । हुजूर डिप्टी कमिश्नर इनाम देते थे। ऐसे ही एक समारोह में मुझे मैंड़ल से विभूषित किया गया । अंग्रेज साहिब बहादुर ने एक बढ़िया खच्चर के गले में मैड़ल डाला, फिर मेरे गले में । दो-एक मेंड़ल हॉकी में, दो-एक डिबेटिंग में जीते । डिबेटिंग ,हॉकी और स्टेज-अभिनय में मेरी भूमिका अच्छी रहती थी ।"[2]

भीष्म साहनी ने ई.स. 1933 में, डी.ए. वी. कालिज रावलपिण्ड़ी से Intermediate की परीक्षा पास की । उसके बाद वे लाहौर चले गए । लाहौर के गवर्नमेंट कालिज से उन्होंने बी.ए. की परीक्षा ई.स. 1935 में और एम्.ए. (अंग्रेजी साहित्य) की परीक्षा ई.स. 1937 में पास की । आगे चलकर उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।

भीष्म साहनी के छात्र-जीवन में, सारे देश में स्वतंत्रता आंदोलन जोरों पर था । उनके मन में कांग्रेस नेताओं के प्रति गहरी आस्था थी । स्वतंत्रता-संग्राम के कारण माहौल में आत्मोत्सर्ग की भावना विशेष रूप से जोरों पर थी। उन पर देशप्रेम पर लिखें गीतों का प्रभाव था। उन्हें देश-प्रेम पर लिखे गीत अब

---

1 भीष्म साहनी - मेरे साक्षात्कार - भीष्म साहनी , पृष्ठ - 146 ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

भी याद आते हैं --

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जायें वीर अनेक ।"[1]

इस प्रकार भीष्म साहनी ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के वातावरण में अपनी शिक्षा पूरी की । उन दिनों, कालिजों में सर्वत्र अंग्रेजी का ही बोलबाला था । भीष्म साहनी सरकारी अफसर बनने के सपने में डूबे थे । कालिज के दिनों में उन पर उनके लोकप्रिय अध्यापक ' जसवंत राय " का काफी प्रभाव था यही कारण है कि उन्होंने अंग्रेजी विषय लेकर एम्.ए. की उपाधि ली ।

1.1.6 **नौकरियाँ तथा व्यवसाय--**

भीष्म साहनी ने एम्.ए. करने के पश्चात अपने पिताजी के साथ व्यापार करना शुरू किया । इसलिए उनकी आगे की शिक्षा में रूकावट आयी । सरकारी अफसर बनने की इच्छा सपना बनकर रह गयी । वे कमीशन ऐजण्ट थे । न जाने गांधीवादी विचारधारा का असर था या और कुछ था, पर उन्हें मुनाफा कमाना, स्वयं माल खरीदकर मुनाफे पर बेचना मंजूर न था । दूसरा महायुद्ध छिड़ जाने पर सरकार ने गर्म कपड़े पर भी नियंत्रण कर दिया । अधिकृत विक्रेता बनने के लिए उन्हें दिल्ली में जाकर टेक्सटाइल कंट्रोलर से मिलना पड़ा । वहाँ दस हजार रूपयों की रिश्वत माँगी गयी । भीष्म साहनी रिश्वत देने को आमादा नहीं हुए । फलस्वरूप वे अधिकृत विक्रेता नहीं बन पाए । इस प्रकार भीष्म साहनी व्यापार में नाकारा व्यक्ति साबित हुए ।फिर भी व्यापार का काम दस साल तक उनके गले में लटका रहा । यह वही समय है जब वे स्थानीय डी.ए.वी.कालिज में ऑनरेरी तौर पर पढ़ाते थे और नाटक भी करते, बाजार में व्यापार करते और साथ में सक्रिय कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में काम भी करते थे । देश स्वतंत्र होने पर आजादी का समारोह देखने वे दिल्ली चले आये, फिर दुबारा वापस रावलपिण्डी नहीं गए । इस प्रकार देश की आजादी के साथ उन्हें भी व्यापार से छुटकारा मिला । दिल्ली आने के बाद वे कुछ समय बंबई में अपने बड़े भाई बलराज के साथ रहने लगे । वहाँ वे बेकारी की हालत में रहे । आगे चलकर अंबाला में एक कालिज में उन्होंने नौकरी स्वीकार कर ली । फिर वे सन 1949-50 में दिल्ली चले गये।उन दिनों वे कालिज में पढ़ाने लगे । दिल्ली में उस समय 'कलचरल फोरम

---

1 सं. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकूर - भीष्म साहनी :व्यक्ति और रचना, पृष्ठ - 12 ।

नाम से युवा साहित्यकारों की एक बैठक भी हुआ करती थी । भीष्म साहनी उसमें भाग लेते और अपनी कहानियाँ पढ़कर सुनाते । इससे उन्हें बड़ा प्रोत्साहन मिला ।

भारत सरकार की ओर से सन 1957 में भीष्म साहनी का चयन एक अनुवादक के रूप में सोवियत संघ में हुआ । भीष्म साहनी ने वहाँ लगभग सात बरस काम किया । वहाँ से लौटने पर उन्होंने दुबारा दिल्ली के कालिज में पढ़ाना शुरू किया ।उन्होंने नौकरी करने के साथ-साथ सन 1965-67 तक नयी कहानियों के संपादन का कार्यभार भी सँभाला । फिर सन 1980 में अध्यापन-कार्य से अवकाश प्राप्त कर वे स्वतंत्र रूप से लेखन-कार्य में जुट गये ।

1.1.7 **विवाह--**

भीष्म साहनी के पिता अपने दोस्त की बेटी के साथ उनकी शादी करना चाहते थे । लेकिन वे नहीं माने । इस संबंध में स्वयं भीष्म साहनी का कथन है-" पिताजी एक जगह अपने मित्र की बेटी के साथ मेरी शादी कर देना चाहते थे । मैं नहीं माना ।पर सीधा विरोध करने के बजाए मैंने पिताजी के ही एक दूसरे मित्र से आग्रह किया कि वह पिताजी को समझाएँ ।"[1]

भीष्म साहनी की शादी सन 1944 में शीला के साथ हुई। अपनी शादी के संबंध में शीला साहनी कहती है-" जब मेरी शादी हुई तब मेरी उम्र 20 वर्ष और भीष्म साहनी जी की 28 वर्ष की थी । हम दोनों एक-दूसरे को शादी से पहले, थोड़ा-बहुत जानते थे क्योंकि भीष्म साहनी जी की मौसेरी बहन बी.ए. में मेरी जमात में पढ़ती थी, ओर भीष्म जी ने एकाध बार हमें पढ़ाया भी था । हम दोनों की शादी भीष्म जी की बहन की ही पहलकदमी पर हुई थी । वह मेरी पक्की सहेली थी और भीष्म जी को भी बहुत चाहती थी । [2] इस प्रकार भीष्म साहनी की शादी शीला के साथ उनकी मौसेरी बहन के कारण संपन्न हुई ।

1.1.8 **संतान--**

भीष्म साहनी का परिवार छोटा-सा है ।उनके परिवार में पति-पत्नी और दो बच्चे हैं । उनका एक बेटा है जिसका नाम है वरूण और एक बेटी भी है जिसका नाम कल्पना है । कल्पना की शादी हो चुकी है ।उनके बेटे वरूण ने मास्को में पढ़ाई की है ।भीष्म साहनी को अपने बच्चों से बेहद

----

1 भीष्म साहनी - मेरे साक्षात्कार : भीष्म साहनी, पृष्ठ- 55 ।

2 सं. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकूर -भीष्म साहनी :व्यक्तित्व और रचना, पृष्ठ-64 ।

प्यार है । बच्चों को भी अपने पापा बहुत पसंद हैं । भीष्म साहनी अपने बेटे वरूण के साथ घण्टों बहस करते हैं, फिर भी वे अपना संयम नहीं खोते । वे सहज भाव से बहस करते हुए वरूण को अपनी बात समझाते हैं । बच्चों की किसी भी समस्या पर वे उनके साथ चर्चा करके, उसका हल कर देते हैं ।

1.1.9 **मित्र–परिवार––**

स्कूल के दिनों में भीष्म साहनी की दोस्ती गरीब लड़कों के साथ ही हुई थी । उनके स्कूली दोस्तों के नाम थे – रोशनलाल, धर्मदत्त और हरबंसलाल । उनके सारे दोस्त पढ़ने में जहीन थे, पर एक रोशनलाल को छोड़ कोई भी अपनी शिक्षा पूरी कर नही पाया । अपना पेट पालने के लिए भीष्म साहनी के दोस्तों को पढ़ाई अधूरी छोड कोई न कोई काम–धंधा करना पड़ा था । इन सारे दोस्तों की मृत्यु असमय में गरीबी और बीमारी के कारण हुई ।

भीष्म साहनी स्कूली दिनों के दोस्तों को याद करते हुए कहते हैं "वे खेलकूद और गहरी दोस्तियों के दिन थे, और मेरी भी अनेक गहरी दोस्तियाँ हुई ।और इनमें से अनेक दोस्तियाँ गरीब लड़कों के साथ हुई । पर इन दोस्तियों का किस्सा भी अपने में बड़ा अटपटा और दर्दनाक–सा है ।"[1]

भीष्म साहनी का सहपाठी दोस्त रोशनलाल पढ़ने में काफी तेज था । उसकी लिखावट मोती पिरोने जैसी सुंदर थी ।पर वह इतना गरीब था कि उसके पास कपड़ों का एक ही जोड़ा था, जिसे वह रात को धोकर नंगा सोकर, दिन में पहनता । जाड़ों के दिनों में, वह ठिठुरता रहता । वह बड़ा स्वाभिमानी था। उसका स्वाभिमान तब टूटा जब उसे पढ़ाई छोड़कर क्लर्की करनी पड़ी । उसने फिर भी अपनी शिक्षा बी.ए. तक पूरी की, पर घर की गरीबी ज्यों-की-त्यों रही । उसे अपनी गरीबी बड़ी सालती थी । भीष्म साहनी जब कभी उससे मिलते, तब उसे झेंप महसूस होती और वह स्वयं को उखड़ा–उखड़ा महसूस करता । भीष्म साहनी जब लाहौर में एम्.ए. कर रहे थे तब वह तपेदिक का मरीज होकर, लाहौर के अस्पताल में भर्ती हुआ था । भीष्म साहनी उसे अस्पताल में मिलने जाते ।जब एक बार वे उसे अस्पताल में मिलने गए तो पता चला कि दो दिन पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी थी ।

भीष्म साहनी को अपने दूसरे दोस्तों में से ब्राह्मण दोस्त और सहपाठी धर्मदत्त का भी याद है। वह पढ़ने में इतना जहीन था कि अक्सर कक्षा में पहले नंबर पर आ जाता था । वह एक अँधेरी कोठरी

---

1 सं. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकूर: भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना, पृष्ठ – 53 ।

में रहता था । उसका अंधा बाप विवाह के गीत लिखता था । उसने विवाह के गीत नाम से एक गुटका भी छपवाया था । वह अपने अंधे बाप का चिराग था, जो आठवीं कक्षा में ही सरसाम का शिकार होकर बुझ गया था । पर भीष्म साहनी की आँखों में आँसू न आये थे ।

भीष्म साहनी का एक और दोस्त तथा सहपाठी बरकतराम भी पढ़ने में जहीन था । वह प्राइमरी में, वजीफे के इम्तहान में बैठा था, पर सफल नहीं हो पाया । उसे वजीफा नहीं मिला । बाद में वह पढ़ाई में धीरे-धीरे पिछड़ता गया । सातवीं कक्षा में पहूंचते-पहुँचते वह सदा के लिए आँखों से दूर चला गया ।

भीष्म साहनी को लंबे कदवाला और घुँघराले बालोंवाला हरबंसलाल भी याद है । उसके साथ उनकी दोस्ती थी । वह पढ़ने में तेज था पर दसवीं कक्षा के आगे पढ़ नहीं पाया । वह दसवीं पास करके, बिजली का फिटर बन गया । फिटर बनने के बाद उसे झेंप होने लगी और उसने भीष्म साहनी के घर आना-जाना बंद किया । जब भीष्म साहनी लाहौर से छुट्टी पर आये, तब उन्हें पता चला कि वह नहीं रहा ।

इस प्रकार भीष्म साहनी के सहपाठी दोस्त एक-एक करके चल बसे । सभी वक्त के हाथों खिलने से पहले सदा के लिए मुरझा गये ।

भीष्म साहनी की कालिज की दोस्तियाँ बहुत गहरी दोस्तियाँ नहीं थीं । पर इल्ताफ हुसैन नाम के एक दोस्त से उन्हें बहुत प्यार था । वह बहुत खूबसूरत तस्वीरें बनाता था और उसे कुत्ते पालने का शौक था । देश के बँटवारे के समय वह मुस्लिम लीगी था और भीष्म साहनी कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे ।इस कारण से उनकी दोस्ती में तनाव भी आ गया था ।

कालिज छोड़ने के बाद, भीष्म साहनी की दोस्ती अपने बड़े भाई बलराज के दोस्तों से हुई । वे उनके साथ घूमते फिरते थे । अपने से ज्यादा उम्र के दोस्तों के कारण भीष्म साहनी की जानकारी बढ़ी , लेकिन वे स्वयं को पिछड़ा महसूस करने लगे । वे अन्तर्मुख होते चले गये ।

कालिज के जमाने में उनकी दोस्ती अपने अध्यापकों के साथ भी रही । पर हमउम्र लड़कों के साथ की दोस्ती में जो खुलापन और बेतकल्लुफी होती है, वह इस दोस्ती से कोसों दूर थी ।

अध्यापक तथा लेखक बने भीष्म साहनी के मित्र-परिवार में शामिल हैं – निर्मल,

रामकुमार, नरेशकुमार, योगेशकुमार, अन्सारी, आनंद स्वरूप, हंसराज रहबर कल्प महादेव आदि ।ये सारे मित्र जब साथ मिलते थे , महफिल–सी सजती तथा चर्चाएँ छिड़ जाती । नयी नयी किताबों पर बहस होती । अपन इन मित्रों के साथ भीष्म साहनी बड़े प्रसन्न नजर आते हैं ।

1.2. **व्यक्तित्व--**

भीष्म साहनी स्वभाव से बड़े ही शांत, चिंतनप्रिय और एकांतप्रिय व्यक्ति है । उनके व्यक्तित्व में सादगी, विनम्रता, सहनशीलता और सेवाभाव आदि प्रमुख विशेषताएँ पायी जाती हैं ।उन्हें खेलकूद, तैराकी, घुमक्कड़ी और कुछ खास विषयों की पढ़ाई में विशेष रूचि रही है । चित्र तथा ललित कलाओं की प्रदर्शनी देखना भी उन्हें अच्छा लगता है । उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1.2.1 **सादगी--**

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व में सादगी भरी है । पिताजी के सक्रिय आर्यसमाजी कार्यकर्ता होने के कारण तथा घर के धार्मिक वातावरण के कारण उनके व्यक्तित्त्व में सादगी पनप चुकी है ।उनके बचपन में घर के अन्दर सदाचार के नियम टँगे रहते –

"सादापन जीवन, सजावट मृत्यु है ।
सदाचार जीवन, दुराचार मृत्यु हैं ।"[1]

उनके शिक्षा–दीक्षा के दिनों में सारे देश में स्वतंत्रता की लहर जोरों पर थी । उन्हें काग्रेस की नीतियाँ अच्छी लगती थीं । एम.ए. की पढ़ाई के बाद वे सक्रिय कांग्रेसी कार्यकर्ता बने थे और खद्दर पहनते थे । सादगीपूर्ण विचारों का प्रभाव उनके पिताजी और मौसाजी पर भी हुआ था, इसलिए भीष्म साहनी की सगाई के शगुन में उन्होंने लड़किवालों से केवल सवा रूपया लिया था ।

1.2.2 **विनम्रता--**

भीष्म साहनी स्वभाव से अत्यधिक विनम्र हैं । उनकी विनम्रता उनकी पत्नी को अच्छी नहीं लगती । वे कहती है–"भीष्म साहनी की एक बात है जो अब तक मुझे अच्छी नहीं लगती, उनकी अत्यधिक विनम्रता । विनम्रता अच्छी चीज है , मगर यह उसे बहुत दूर ले जाते हैं, जिसकी कोई जरूरत नहीं होती।

---

1 भीष्म साहनी – अपनी बात, पृष्ठ – 10 ।

विनम्र होना अच्छी बात है, परंतु अति विनम्र होना तो अच्छा नहीं ।लोग नाजायज फायदा उठाते हैं ।"[1] स्पष्ट है कि अपनी पत्नी की निगाह में भी वे हद से ज्यादा विनम्र हैं ।

1·2·3 **सहनशीलता--**

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व में सहनशीलता कूट-कूटकर भरी है ।उनके सहनशील स्वभाव के कारण ही उन्होंने अपनी साँस की तकलीफ के बारे में अपनी पत्नी को नहीं बताया । सारा दर्द चुपचाप सहते-छुपाते रहे । वे बेहद काम करते हैं, पर थकने के बाद भी वैसे ही सहज भाव से रहते हैं ।

1·2·4 **सेवाभावी--**

पिताजी के सक्रिय आर्यसमाजी कार्यकर्ता होने का असर भीष्म साहनी के व्यक्तित्व पर निःसंदेह हुआ है । उनका रूझान कांग्रेसी नीति की ओर रहने के कारण उनके व्यक्तित्व में समाजसेवाभाव धीरे-धीरे दृढ़मूल होता गया है । बाद में साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण समाज के शोषित, पीड़ित वर्ग के प्रति उनके मन में हमदर्दी का भाव और भी बढ़ता गया है ।यही कारण है कि उनके व्यक्तित्व में समाजसेवाभाव पाया जाता है। वे एक सेवाभावी व्यक्ति के रूप में पहचाने जाते हैं ।

1·2·5 **विशेष रूचियाँ-**

भीष्म साहनी का खान-पान में कोई विशेष आग्रह नहीं है ।उन्हें स्कूली दिनों से खेल-कूद से गहरा लगाव था । स्कूल और कालिज के दिनों में हॉकी खेलने का उन्हें बेहद शौक था । बी.ए. के बाद उन्होंने एम.ए. में दाखिला इसलिए लिया कि वे हॉकी खेल पायेंगे । बाद में लम्बे सैर, तैराकी घुमक्कड़ी आदि का शौक भी रहा ।

लड़कपन में भीष्म साहनी की रूचि मूर्तिकला में विशेष पनपने लगी थी । श्रीनगर में एक विदेशी महिला बहुत बढ़िया बुत बनाती थी । भीष्म साहनी मूर्तिकला सीखने वहाँ जा पहुँचे । पर वहाँ की फीस बहुत ज्यादा थी ।इसलिए वे ढाई महीने से ज्यादा सीख नहीं पाए ।

---

1 सं.राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकूर -भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना, पृष्ठ - 66 ।

स्कूल तथा कालिज के दिनों से ही भीष्म साहनी की रूचि नाटक में रही है । वे एम्.ए. करने के पश्चात व्यापार तथा ऑनरेरी अध्यापन का काम कर रहे थे तथा सक्रिय कांग्रेसी भी थे लेकिन उन दिनों में भी वे नाटक में भाग लेते थे ।

भीष्म साहनी को लेखन के अतिरिक्त यात्रा करना पसंद है । उन्हें चित्र और कला प्रदर्शनियाँ देखना अच्छा लगता है । उन्हें स्कूली दिनों से अभी तक इतिहास की पढ़ाई रूचिकर हैं । इतिहास को छोड़ उन्हें साहित्य और समाजशास्त्र की पढ़ाई में रूचि है । पर वे नियमित रूप से पढ़ नहीं पाते । कालिज छोड़ने के बाद उन पर प्रेमंचद के पत्र इकट्ठा करने की धुन सवार हुई और उन्होंने चालीस के करीब पत्र भी इकट्ठे किये । इस प्रकार हम देखते हैं कि, भीष्म साहनी के व्यक्तित्व के विविध आकर्षक पहलू हैं ।

1.2.6 **अपनी पत्नी की नजर में भीष्म साहनी--**

भीष्म साहनी की पत्नी का नाम है ' शीला ' । उन्हें अपने पति भीष्म का संकोची और चुप स्वभाव अच्छा नहीं लगता था । शादी के बाद के आरंभिक दिनों में, भीष्म साहनी खद्दर पहनते थे, इसलिए वे शीला को और भी नीरस दिखाई देते थे । शादी के बाद शीला को अपने सास-ससुर के साथ रहना काफी कठिन लगा था, तब भीष्म साहनी अपनी पत्नी को खुश रखने की पूरी कोशिश करते । पर हमेशा वे गंभीर बने रहते ।

शीला साहनी बताती है कि जब शाम के वक्त अँधेरा छाने लगता है जब भीष्म जी को लिखना अच्छा लगता है । कई बार रात के दस या ग्यारह बजे कहानी खत्म होते ही वे उन्हें पढ़ने देते हैं । उनका शाम के समय लिखना शीला को अच्छा नहीं लगता । उन्हें इस समय घूमना अच्छा लगता है । इस बात को लेकर पति-पत्नी के बीच झगड़ा भी हो जाता था । बाद में भीष्म साहनी ने फैसला किया कि वे शाम के वक्त लिखा नहीं करेंगे । जब अपनी कहानी छपती है, तब वे बहुत खुश होते हैं ।

शीला साहनी अपने पति ,भीष्म साहनी के संबंध में कहती है-" भीष्म जी बहुत ही अच्छे पति हैं, बहुत ही Considerate । "गुस्सा उन्हें कभी नहीं आता और कोई बात इन्हें खिझाती नहीं ।"[1]

---

1 सं. राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकूर - भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना, पृष्ठ - 65 ।

1.3 साहित्य–सृजन––

भीष्म साहनी ने कहानी, उपन्यास, नाटक तथा निबंध आदि लिखकर हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान किया है । अनुवादक के रूप में भी उनका कार्य उल्लेखनीय रहा है । अपने साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत के संबंध में वे कहते हैं-" हमारे घर का माहौल साहित्य–सृजन के अनुकूल था, भले ही उसमें धार्मिक, नैतिक पक्ष प्रमुख था । बाद में अंग्रेजी साहित्य के एक अध्यापक श्री. जसवंत राय, बड़े साहित्यप्रेमी और बढ़िया अध्यापक मिले । परिवार में मेरी दो फुफेरी बहनें, सत्यवती मलिक और पुरूषार्थवती – कहानियाँ –कविताएँ लिखती थीं और उनकी रचनाएँ छपती थी । बाद में मेरे भाई की रचनाएँ छपने लगी । इस तरह साहित्य में रूचि बढ़ती गयी ।"[1]

भीष्म साहनी ने कविताएँ बचपन में लिखी थीं किन्तु बाद में कभी नहीं । स्कूली दिनों से ही उनका लेखन कार्य आरंभ हुआ था । जब वे दसवीं कक्षा के छात्र थे तब उन्होंने पहली कहानी लिखी जो इण्टर कालिज की पत्रिका में छपी थी । उसका शीर्षक उन्हें याद नहीं रहा । यह कहानी किसी अबला नारी के संबंध में थी । वही कहानी बाद में कालिज की पत्रिका में भी छपी थी। वैसे तो भीष्म साहनी की प्रथम रचना ' नीली आँखें ' शीर्षक कहानी है, जो अमृतराय के संपादन में ' हंस ' में सन 1945 के आसपास छपी थी ।

भीष्म साहनी के साहित्य में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है । उन्होंने अपनी रचनाओं में पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न विकृतियों और विसंगतियों को आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है । उनकी रचनाओं में समाज के मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का जीवन्त चित्रण प्राप्त होता है । समसामयिक समस्याएँ ,ऐतिहासिक तथा पौराणिक विषयों को लेकर भी उन्होंने साहित्य की रचना की है । उनका साहित्यसंसार इस प्रकार है –––

1.3.1 कहानी–संग्रह––

भीष्म साहनी प्रेमचंद जी की परंपरा के लेखक माने जाते हैं । उन्होंने सन 1953 से 1995 तक नौ कहानी–संग्रह प्रकाशित किये हैं ––

---

1 भीष्म साहनी – मेरे साक्षात्कारः भीष्म साहनी , पृष्ठ – 176 ।

1 भाग्यरेखा (ई.स.1953)

2 पहला पाठ (ई.स.1956)

3 भटकती राख (ई.स. 1966)

4 पटरियाँ (ई.स. 1973)

5 वाड्.चू (ई.स. 1978)

6 शोभायात्रा (ई.स. 1981)

7 निशाचर (ई.स. 1983)

8 पाली (ई.स. 1989)

9 डायन (ई.स. 1996)

इसके अलावा उपर्युक्त कहानी–संग्रहों में से चुनी हुई कहानियों के दो कहानी–संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं --

1 मेरी प्रिय कहानियाँ ।

2 प्रतिनिधी कहानियाँ ।

1.3.2 **उपन्यास--**

हिंदी कथासाहित्य में लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार भीष्म साहनी के ई.स. 1967 से अब तक छह उपन्यास प्रकाशित हुए हैं ---

1 झरोखे (ई.स.1967)

2 कड़ियाँ (ई.स.1970)

3 तमस (ई.स. 1973)

4 बसन्ती (ई.स. 1980)

5 मय्यादास की माड़ी (ई.स. 1988)

6 कुन्तो (ई.स. 1993)

1.3.3 **नाटक--**

1 हानूश (ई.स.197?)

2 कबिरा खड़ा बजार में (ई.स.1981

3 माधवी (ई.स. 1984)

4 मुआवज़े (ई.स. 1993)

5 रंग दे बसन्ती चोला (ई.स. 1996)

2.3.4 **जीवनी--**

1 बलराज भाई ब्रदर्स (ई.स. 1981)

1.3.5 **निबंध--संग्रह--**

1 अपनी बात (ई.स. 1989)

1.3.6 **बाल--साहित्य--**

1 गुलेल का खेल (ई.स.1980)

2 वापसी (ई.स.1989)

इसके अलावा ' रंग दे बसन्ती चोला 'कृति भी प्रकाशित हुई है ।

1.3.7 **संपादक भीष्म साहनी** –

भीष्म साहनी ने 'नई कहानी ' नामक पत्रिका का सौजन्य संपादन ई.स. 1965 से 1967 तक संपन्न किया। वे एक कुशल संपादक भी कहे जा सकते हैं ।

1.3.8 **अनुवादक भीष्म सहानी--**

भीष्म साहनी ' विदेशी भाषा प्रकाशन गृह ,मास्को ' से ई.स. 1957 से 1963 तक, सात सालों तक अनुवादक के रूप में संबद्ध रहे । इस कालावधि में,उन्होंने दो दर्जन रूसी पुस्तकों अनुवाद किया । इन अनूदित कृतयों में टॉलस्टॉय की कहानियाँ तथा उपन्यास ' पुनरूत्थान ', निकोलाई आस्त्रव्स्की का ' जयजीवन ' और चगेल ऐतमातोव का लघु उपन्यास ' पहला अध्यापक ' आदि कृतियाँ विशेष उल्लेखनिय हैं । उन्होंने चिंगेज आइतमातोव कलताई मोहम्मेजानोव के नाटक का अंग्रेजी अनुवाद

से ' फूजीयामा ' नाम से हिंदी अनुवाद किया है ।

भीष्म साहनी ने यशपाल के उपन्यास ' दिव्या ' का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है । इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न बीस हिंदी कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद भी किया है ।

1.4 **प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान--**

भीष्म साहनी की बहुआयामी प्रतिभा कहानी, उपन्यास , नाटक, निबंध, जीवनी, अनुवाद और संपादन कार्य के रूप में हिंदी साहित्य में पल्लवित और पुष्पित हो चुकी है । उनके साहित्यिक कृतित्व का श्रेष्ठत्व उन्हें प्रदत्त विभिन्न पुरस्कारों से भी सिद्ध हुआ है । उनका बहुचर्चित उपन्यास ' तमस ' के लिए उन्हें ई.स. 1975 में भारत सरकार की ओर से ' साहित्य अकादमी पुरस्कार ' तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ' प्रेमचंद पुरस्कार ' दिया गया । इसी साल वे ' भाष्य विभाग ,पंजाब ' द्वारा ' शिरोमणि लेखक पुरस्कार ' से विभूषित किय गये । वे ई.स. 1979-80 में ' दिल्ली साहित्य, कला परिषद ' द्वारा सम्मानित किये गये । ई.स. 1980 में ' ऐफ्रो-एशिआई लेखक संघ ' की ओर से उन्हें ' लोटस पुरस्कार ' दिया गया । ई.स. 1985 में उनके ' झरोखे ' उपन्यास को 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान 'का पुरस्कार प्राप्त हुआ । ई.स. 1990 को ' मय्यादास की माड़ी ' उपन्यास के लिए उन्हें ' हिंदी अकादमी , दिल्ली ' का पुरस्कार दिया गया । वे ' प्रगतिशील लेखक महासंघ ' तथा ' ऐफ्रो-एशिआई लेखक संघ ' से भी संबद्ध रहे है ।

निष्कर्ष--

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखनेवाले तथा हिंदी साहित्य में कथाकार के रूप में ख्यातिप्राप्त भीष्म साहनी का जन्म रावलपिण्ड़ी में 8 अगस्त, 1915 को हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा शहर के नजदीक गुरूकुल में हुई । तत्पश्चात वे अपने भाई के साथ स्थानीय डी.ए.वी. स्कूल में डाले गये । वे ई.स. 1933 में, डी.ए.वी. कालिज ,रावलपिण्ड़ी से Intermediate परीक्षा उत्तीर्ण हुए । उनकी आगे की पढ़ाई लाहौर में हुई । लाहौर के गवर्नमेंट कालिज से उन्होंने बी.ए. परीक्षा ई.स. 1935 में और एम्.ए. (अंग्रेजी साहित्य) की परीक्षा ई.स. 1937 में पास की । आगे चलकर उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि पंजाब विश्वविद्यालय से प्राप्त की ।

ई.स. 1937 से ई.स. 1947 तक उन्होंने व्यापार स्थानीय कालिज में ऑनररी अध्यापन,

नाटक खेलना तथा कांग्रेस का काम किया ।देश की आजादी के समय वे दिल्ली में थे । वहाँ से वे अपने भाई बलराज के पास बंबई गये । बंबई में उन्होंने बेकारी की हालत में दिन काटे । तत्पश्चात उन्होंने कुछ समय अंबाला तथा दिल्ली में अध्यापन कार्य किया । ई.स. 1957 में भारत सरकार की ओर से वे अनुवादक के रूप में चुने गये और ई.स. 1957 से 1963 तक सात साल मास्को में अनुवाद कार्य सँभालते रहे । मास्को से आने के बाद उन्होंने दिल्ली के कालिज में नौकरी की। जाकिर हुसेन कालिज में वे अध्यापक नियुक्त हुए । जाकिर हुसेन कालिज में वे ई.स. 1980 तक अर्थात अवकाश–प्राप्ति के समय तक अंग्रेजी का अध्यापन करते रहे । वे अवकाश पाते ही स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य में जुट गए ।

भीष्म साहनी को अपने बचपन के दोस्तों की आज तक याद है बचपन में उनकी दोस्ती गरीब लड़कों के साथ ही ज्यादा हुई । उन्हें बरकतराम, रोशनलाल, धर्मदत्त और हरबंसलाल इन दोस्तों की याद अभी भी आती है । कालिज के दिनों में उनकी दोस्ती कालिज के अध्यापकों के साथ भी हुई तथा अपने बड़े भाई बलराज के दोस्तों के साथ भी उनकी दोस्ती थी । कालिज के दिनों में इल्ताफ हुसैन नामक मुसलमान लड़के के साथ उनकी गहरी दोस्ती हुई थी ।उनके घर का वातावरण सादगीपूर्ण एवं धार्मिक था। उनके व्यक्तित्व पर माता–पिता के धार्मिक एवं सादगीपूर्ण व्यवहार का काफी असर हुआ है । इसके साथ ही अपने बड़े भाई बलराज के व्यक्तित्व से वे काफी प्रभावित हुए है । उनमें और उनके बड़े भाई के स्वभाव और व्यक्तित्व में बचपन में काफी अन्तर था । भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बहु आयामी है । वे बहुत ही सीधे, सरल स्वभाव के हैं । सादगी, विनम्रता , सहनशीलता तथा सेवाभाव उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं । उन्हें खान–पान संबंधी विशेष रूचि नहीं है।स्कूली दिनों से, कालिज के दिनों तक उन्हें खेलकूद में, खासकर हॉकी खेलने में दिलचस्पी थीं । उन्हें डिबेटिंग तथा नाटकों में हिस्सा लेना भी काफी पसंद था । इसके अलावा तैराकी, घुमक्कड़ी, यात्रा करना, प्रदर्शनी देखना उन्हें विशेष पसंद हैं । इतिहास , समाजशास्त्र तथा साहित्य की पढ़ाई में उन्हें विशेष रूचि हैं । अपनी पत्नी की नजर में भीष्म एक अत्यंत अच्छे पति हैं । किन्तु पत्नी शीला को उनकी अत्यधिक विनम्रता अच्छी नहीं लगती तथा उनका शाम के सयम लिखना भी नहीं भाता । पुत्र वरूण तथा पुत्री कल्पना के वे प्यारे पापा हैं । वे अपने बच्चों की समस्याएँ स्वयं हल कर देते हैं ।अपने बेटे वरूण के साथ, बिना गुस्सा हुए, घण्टों बहस करते हैं ।

भीष्म साहनी ने नौ कहानी संग्रह , छः उपन्यास , पाँच नाटक, एक निबंध–संग्रह आदि का लेखन कर हिंदी साहित्य में मौलिक योगदान किया है ' हिंदी उपन्यास ' तथा "नई कहानी ' का संपादन कार्य भी उन्होंने किया है । उन्होंने बच्चों के लिए बालोपयोगी कहानी–संग्रह भी लिखे हैं । उन्होंने अपने

बड़े भाई बलराज साहनी पर आधारित ' बलराज भाई ब्रदर्स ' नामक जीवनी अंग्रेजी में लिखी है । उन्होंने दो दर्जन रूसी किताबों का हिंदी में अनुवाद किया है । इसके अलावा 'दिव्या ' नामक उपन्यास और बीस विभिन्न हिंदी कहानयों का भी अंग्रेजी में अनुवाद किया है । भीष्म साहनी 'साहित्य अकादमी', 'प्रेमचंद पुरस्कार' ,'लोटस पुरस्कार' आदि कई पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं । अपने जीवन अनुभवों ने ही उन्हें लेखक के लिए सामग्री प्रदान की है । इसलिए वे एक सशक्त रचनाकार के रूप में ख्याति प्राप्त हैं ।